pic 76 — भावकर्म प्रक्रिया —।

भावकर्मणोः।

भावे कर्मणि च धातोर्लस्यात्मनेपदम्।

भाववाच्य और कर्मवाच्य में आत्मनेपद होता है, उदाहरण के लिए त्वया मया अन्यैश्च भूयते। में 'भू' धातु का प्रयोग भाववाच्य में हुआ है अतः लट् लकार के प्रथमपुरुष - एकवचन में आत्मनेपद प्रत्यय 'त' होकर 'भूत' रूप बनता है। इसी प्रकार कर्मवाच्य 'अनुभूयते आनन्दः' में 'अनु' पूर्वक 'भू' धातु से आत्मनेपद 'त' होकर 'अनु भू त' रूप बनता है।

सार्वधातुके यक्।

धातोर्यक् भावकर्मवाचिनि सार्वधातुके। भावः = क्रिया। सा च भावार्थ लकारेणानूद्यते। युष्मदस्मद्भ्यां सामानाधिकरण्याभावात् प्रथमः पुरुषः। तिङ्वाच्य क्रियाया अद्रव्यरूपत्वेन द्वित्वाद्यप्रतीतेर्न द्विवचनादि, किन्त्वेकवचनमेवोत्सर्गतः। त्वया मया अन्यैश्च भूयते। बभूवे।

भाव और कर्मवाची सार्वधातुक परे होने पर धातु के बाद 'यक्' आता है। उदाहरण के लिए 'भू त' में भाववाची सार्वधातुक 'त' परे होने के कारण प्रकृत सूत्र से धातु 'भू' के बाद 'यक्' होकर 'भू य त' रूप बनता है। इस स्थिति में 'त' प्रत्यय की 'टि' को एकत्व होकर

इसी प्रकार 'अनुभूत' में कर्मवाची सार्वधातुक 'त' परे होने के कारण धातु से 'यक्' होकर पूर्ववत् 'अनुभूयते' रूप बनता है।

स्य-सिच्-सीयुट्-तासिषु भाव-कर्मणोरुपदेशेऽज्झनग्रहदृशां वा चिण्वदिट् च।

उपदेशे योऽच् (चिण्वदिट् च) तदन्तानां हनादीनां च चिणीवाङ्गकार्यं वा स्यात् स्यादिषु भावकर्मणो-र्गम्यमानयोः स्यादीनामिडागमश्च। चिण्वद्भाव-पक्षेऽयमिट्। चिण्वद्भावाद् वृद्धिः। भाविष्यते, भविष्यते। भाविता, भविता। भाविषीष्ट, भूयताम्। अभूयत। भूयेत। भविषीष्ट।

भाव और कर्म-विषयक स्य, 'सिच्', 'सियुट्' और 'तास्' परे होने पर उपदेश में अजन्त अंग, हन्, ग्रह् और दृश्- इनके स्थान पर विकल्प से 'चिण्' के समान कार्य होते हैं और 'इट्' भी होता है। यह 'इट्' चिण्वद्भाव होने पर ही होती है। यह 'स्य', 'सिच्' आदि प्रत्ययों को ही होती है और उन्हीं का (आगम) अवयव बनता है। इस प्रकार यह सूत्र दो कार्य करता है — (1) 'स्य' आदि को इडागम और (2) चिण्वद्भाव।